

भिण्डी की उन्नत खेती

रामस्वरूप जाट* और बाबू लाल चौधरी**

भिण्डी ऊष्ण भागों और शीतोष्ण प्रदेशों के गर्म क्षेत्रों पर उगाई जाने वाली सब्जी है। इसकी फसल उन क्षेत्रों में प्रमुखता से उगाई जा सकती है, जहां दिन का तापमान 2.5-4.0 डिग्री सें.ग्रे. के बीच में रहता है तथा रात्रि का तापमान 2.2 डिग्री सें.ग्रे. से नीचे नहीं आता है। भिण्डी को इसके हरे, मुलायम एवं स्वादिष्ट फलों के लिए उगाया जाता है। भारत में मुख्य रूप से भिण्डी की दो फसलें ली जाती हैं, एक गर्मी में व दूसरी बरसात के मौसम में। देश के पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी एक ही फसल ली जाती है, जिसकी बुआई मार्च-अप्रैल में की जाती है।

ग्रीष्मकालीन भिण्डी की फसल लेने के कुछ अतिरिक्त फायदे हैं। इस मौसम में आमतौर पर दूसरी सब्जियां कम उपलब्ध होने के कारण बाजार मूल्य अच्छा मिलता है तथा इस दौरान मौजैक रोग का प्रकोप बहुत ही कम होता है। अतः इस मौसम में भिण्डी की वे किस्में भी बो सकते हैं जो मौजैक के प्रति संवेदनशील होती हैं। इस प्रकार ग्रीष्मकालीन भिण्डी के उत्पादन की उन्नत तकनीकी को अपनाकर अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं।

भिण्डी की फसल को लगभग सभी प्रकार की भूमि पर उगाया जा सकता है। गर्मियों की फसल के लिए भारी दोमट मृदा अधिक उपयुक्त रहती है। इस मृदा में नमी अधिक समय तक बनी रहती है। बरसात वाली फसल के लिए बलुई दोमट भूमि का चयन करना चाहिए, जिसमें जल निकास अच्छा हो। खेत की एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा तीन-चार बार हैरो या देसी हल से जुताई करके मिट्टी को भुरभुरा बनाकर खेत को समतल कर लेना चाहिए। बुआई के समय खेत में उपयुक्त नमी होनी अति आवश्यक है। यदि भूमि में नमी की कमी हो तो खेत की तैयारी से पूर्व एक सिंचाई अवश्य कर लेनी चाहिए।

उन्नत किस्में: देश में भिण्डी की बहुत सी उन्नत एवं रोग अवरोधी किस्मों का विकास किया गया है। इसमें से प्रमुख किस्में इस प्रकार हैं;

पूसा सावनी: यह किस्म पहले पीले मौजैक रोग के प्रति अवरोधी थी लेकिन अब यह सुग्राही बन चुकी है। यह एक अच्छी किस्म है और आज भी इसे उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु में उगाया जाता है।

*राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविधालय, ग्वालियर, (म.प्र.); **कृषि अनुसंधान अधिकारी डेगाना, नागौर



लोकप्रिय एवं लाभकारी सब्जी भिण्डी

जायद में बुआई के 40-45 दिनों बाद फूल व फल प्राप्त होने लगते हैं।

बुआई का समय: जायद वाली फसल की बुआई फरवरी के द्वितीय सप्ताह से मार्च के अन्त तक की जा सकती है।

बीज दर: जायद के मौसम में अंकुरण कम होने के कारण अधिक बीज की आवश्यकता होती है। अतः एक हैक्टर के लिए 18-20 कि.ग्रा. बीज की आवश्यकता होती है।

भूमि उपचार: खेत की तैयारी के समय अन्तिम जुताई के साथ कटुआ कीट के नियंत्रण के लिए भूमि में दानेदार फ्यूराडॉन 25 कि.ग्रा. अथवा थिमेट (10 जी) 10-15 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से मिला लेनी चाहिए।

बीज उपचार: बुआई के पहले बीज को 24 घंटे पानी में भिगो लें। तत्पश्चात बीजों को निकालकर कपड़े की थैली में बांधकर गर्म स्थान में रख दें तथा अंकुरण होने लगे तभी बुआई करें। बीजजनित रोगों की रोकथाम के लिए बुआई से पूर्व थायरम या कैप्टॉन (2 से 3 ग्राम दवा प्रति कि.ग्रा.) से बीज को उपचारित कर लेना चाहिए।

बुआई: गर्मी या जायद की फसल के लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सें.

मी. व पौधे से पौधे दूरी 15 सें.मी. रखनी चाहिए। वर्षा ऋतु की फसल हेतु पंक्ति की दूरी 45-60 सें.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 30-45 सें.मी. रखनी चाहिए।

खाद व उर्वरक: खाद व उर्वरक की मात्रा भूमि में उपस्थित पोषक तत्वों पर निर्भर करती है। 15 से 20 टन सड़ी गोबर की खाद प्रति हैक्टर की दर से बुआई के 25 से 30 दिनों पूर्व खेत में मिला लेनी चाहिए। इसके अतिरिक्त 40 किग्रा नाइट्रोजन, 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 40 कि.ग्रा. पोटाश को प्रति हैक्टर की दर से बुआई से पूर्व आखिरी जुताई के समय देना चाहिए खड़ी फसल में 40 से 60 कि.ग्रा. नाइट्रोजन को दो बराबर भागों में बांटकर पहली मात्रा बुआई के 3-4 सप्ताह बाद पहली निराई-गुड़ाई के समय तथा दूसरी मात्रा फसल में फूल बनने की अवस्था में देना लाभप्रद है।

सिंचाई: गर्मी के मौसम में आवश्यकतानुसार 6-7 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए अन्यथा नमी के अभाव में पौधे सूखने लगते हैं।

निराई गुड़ाई: फसल में 2-3 बार निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों को निकाल देना चाहिए। इससे खरपतवार नियंत्रण के साथ भूमि में वायु संचार भी ठीक रहेगा।

फसल सुरक्षा

पीला मोजैक: यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलाया जाता है। इसका प्रकोप होने पर पत्तियों की शिराएं पीली हो जाती हैं। बाद में फल सहित पूरा पौधा पीला हो जाता है। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए रोगार या मैटासिस्टॉक्स (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव पौधे उगने के बाद से ही 10-12 दिनों के अंतराल पर करते रहना चाहिए।

चूर्णिल फूफंदी रोग: रोगग्रस्त पौधों पर सफेद पाउडर जैसी हल्की पर्त जमा हो जाती है। पत्तियां पीली पड़ जाती हैं तथा धीरे-धीरे गिरने लगती हैं। पौधों पर कैराथेन (0.06 प्रतिशत) का छिड़काव 10-15 दिनों के अंतराल पर दो से तीन बार करना चाहिए।

फल छेदक: यह कीट बढ़ते हुए फलों में छेद करके हानि पहुंचाता है। इसका लार्वा फलों में छेद करता है। पौधों पर थायोडान



उन्नत तकनीक से प्राप्त भरपूर उपज

(0.2 प्रतिशत) का छिड़काव 10-12 दिनों के अंतराल पर दो तीन बार करना लाभकारी होता है।

कटुआ कीट: यह कीट पौधे के उगने के समय पौधे को नीचे से काट देता

उन्नत किस्में

पूसा मखमली: यह एक अगेती किस्म है। इसके फल मुलायम, सीधे हल्के हरे रंग के, लम्बे नुकीले पतले होते हैं। यह ग्रीष्मकाल में उत्तरी भारत के मैदानों में अच्छी पैदावार देती है। इस किस्म की औसत उपज 80-100 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

पंजाब पद्मनी: यह किस्म उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्म तथा बरसात दोनों मौसम में उगाने के लिए उपयुक्त है। यह किस्म पीला मोजैक रोग के प्रति अवरोधी है तथा इस पर जैसिड और कपास कीट का प्रकोप कम होता है। इसकी औसत उपज 100-125 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है।

परभनी क्रांति: यह किस्म पीला मोजैक रोग से प्रतिरोधी है। इस किस्म में बुआई के 40-45 दिनों बाद फूल आना प्रारम्भ हो जाता है। इसकी औसत उपज ग्रीष्म ऋतु में 85-90 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा बरसात में 120-130 क्विंटल प्रति हैक्टर पायी गयी है।

पंजाब-7: यह पीला मोजैक रोग से प्रतिरोधी किस्म है। ग्रीष्म ऋतु में इसकी उपज 50 क्विंटल प्रति हैक्टर तथा बरसात के मौसम में 95 क्विंटल प्रति हैक्टर पायी गयी है।

अर्का अनामिका: यह एक पीला मोजैक रोग से प्रतिरोधी किस्म है। इस किस्म में बुआई के 45 दिनों बाद फल आना प्रारम्भ होता है तथा पहली तुड़ाई 55 दिनों में की जा सकती है। यह एक अच्छी पैदावार देने वाली किस्म है। इसके हरे फलों की उपज 115 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है।



अर्का अनामिका

है, जिससे पौधा सूख जाता है। इससे बचाव के लिए दानेदार प्युराडॉन 25 कि.ग्रा. अथवा थिमेट (10 जी) 10 से 15 कि.ग्रा. मात्रा प्रति हैक्टर की दर से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में मिला देनी चाहिए।

फलों की तुड़ाई: इस फसल में तुड़ाई के समय का बहुत महत्व है। फल अधिक समय तक पौधों पर रहने या तुड़ाई में देरी से फलों में रेशे की मात्रा बढ़ जाती है तथा फलों की कोमलता कम हो जाती है। इससे फलों का स्वाद कम हो जाता है। अतः फलों

को एक दिन के अंतराल पर तुड़ाई करते रहना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण: खरपतवार नियंत्रण हेतु बेसालीन 2.5 लीटर रसायन को बुआई के 4 दिन पूर्व या लासों 5 लीटर रसायन को बुआई के बाद प्रति हैक्टर की दर से पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

उपज: वैज्ञानिक विधि से भिण्डी की खेती करने से 100-120 क्विंटल प्रति हैक्टर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। ■

भाकृअनुप की मासिक लोकप्रिय पत्रिका

‘खेती’ मार्च, 2024 केवीके स्वर्ण जयंती विशेषांक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ स्थानीय संसाधन आधारित जैविक खेती से बढ़ाएं आमदनी
- ◆ पोषण गृह वाटिका से स्वास्थ्य सुरक्षा
- ◆ आदिवासी उत्थान के लिए प्रौद्योगिकियां
- ◆ कृषि विज्ञान केंद्र पहुंच रहे वंचितों तक
- ◆ सब्जी उपज से महिला स्वयं सहायता समूहों में पोषण और आर्थिक समृद्धि
- ◆ कृषि विज्ञान केंद्र पोर्टल
- ◆ कम लागत वाली ट्यूबवेल पुनर्भरण तकनीक
- ◆ संरक्षण कृषि से सतत कृषि विकास
- ◆ भारतीय ग्रामीण युवाओं के सशक्तीकरण के लिए पहल
- ◆ कृषि में ड्रोन का बढ़ता उपयोग
- ◆ कृषि आधारित उद्यमशीलता द्वारा स्वावलम्बन
- ◆ पोषण स्मार्ट ग्रामों द्वारा पोषण सुरक्षा
- ◆ नाडेप से कृषि ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन
- ◆ किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की एक पहल
- ◆ सल्फर के प्रयोग से बढ़ाएं तिलहन की फसलों का उत्पादन

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in